हिन्दी पुनश्चर्या : एक अवलोकन

Dr. Geljibhai Lakhamanbhai Bhatiya
Mahadev Desai G. Mahavidyalaya, Gujarat Vidyapith Randheja,
Dist. Gandhinagar, Gujarat

शिक्षा दिन से शुरू हुआ हिन्दी पुनश्चर्या
विध-विध प्रांत से आये तपस्वी हिन्दी के
और शिमला जवाहर भवन में लगी तपश्चर्या
बेहतरीन रहा कार्यक्रम एवम् रही दिनचर्या।

प्रारम्भ किया सरस्वती वन्दना बाबा के साथ
वंदना करने आयी रेखा की किरण व अनीता साथ
मग्न रहे मेहता जी द्विप प्रागट्य के साथ
ऐसे आरम्भ हुआ लघु भारत का काम साथ-साथ।

सूक्तियों की बूंदों ने हमें रोज संवारा
वक्ताओं ने किया करम बहुत सारा
सूर, तुलसी, कबीर, विद्यापति, नानक धारा
कहानी, नाटक, कविता, उपन्यास रहा प्यारा
दिल दिमाग को भर दिया सारा हमारा।

स्त्रोतविद्रों ने सुनाई कहानियाँ नयी पुरानी
पांडे जी ने अपने पांडित्य से बजाई शरणाई
रज्जब की गजब कहानी हमें सुनाई
जाग उठी दिल में मीठी-मीठी तन्हाई।

बाजी वो मार गए बाजपेयी हक से
अरूण से शब्द निकला दिये की तरह
आत्म-तत्व रचना शरीर निकला दिल से
दोस्तो जीवन व साहित्य का सार है सच में

शहर शिमला बड़ा सुहाना
इतिहास इसका रहा पुराना
शाम का समय बड़ा नज़ारा
तारों की चादर लेकर सो जाता है
और फिर कहता
आज की शाम आपके नाम
कभी-कभी ऐसा हो भी जाता है।